बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

'' ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील, बड़ा ही दयावान है।''

शान्ति और सम्मान:- किसी व्यक्ति या किसी समुदाय की यह इच्छा कि संसार में उसे प्रतिष्ठा प्राप्त हो और आदर की दृष्टि से उसे देखा जाए, अत्यन्त स्वाभाविक है। लेकिन वास्तविक प्रतिरूष्ठा के लिए महानता चाहिए। धारणाओं की सत्यता, भावनाओं की सुन्दरता और चारित्रित शक्ति के अभाव में न तो किसी महानता की कल्पना की सकती है और न हि ऐसी दशा में किसी के लिए हम किसी प्रतिष्ठा की आशा कर सकते है। प्रतिष्ठा उनके लिए होती है, जो दूसरों को गर्त से निकाल कर उन्हे उच्चता के शिखर पर खड़ा कर सके, जिनका दृष्टिकोण संकुचित न हो, जो पूर्वाग्रह, अज्ञान और पक्षपात से बहुत ऊपर उठ चुके हो; जिनके विचार सत्य और तर्कसंगत हो; जिनकी भावनाओं और आचरण के मध्य एकात्मकता और सामंजस्य पाया जाता हो; जो जीवन के रहस्य से परिचित हो; जो जानते हो कि जीवन का वास्तविक लक्ष्य क्या है और वे कौन-से चारित्रिक गुण है जिन पर जीवन की सफलता निर्भर करती है। जिस धम या संस्कृति की आधारशिला सत्य न हो उसकी कोई भी कीमत नही। जीवन को मात्र दुख और पीड़ा की संज्ञा देना जीवन और जगत् दोनों ही का तिरस्कार है। क्या आपने देखा नही कि संसार में काॅटे ही नही होते, फूल भी खिलते है। जीवन में बुढ़ापा ही नही यौवन भी होता है। जीवन निराशा द्वारा नही, बल्कि आशाओं और मधुर कामनाओं द्वारा निर्मित हुआ है। हृदय की पवित्र एवं कोमल भावनाए निरर्थक नही हो सकती। क्या बाग के किसी सुन्दर महकते फूल को निरर्थक कह सकते है? एक छोटे-से पुष्प को निरर्थक नहीं कहा जा सकता, तो जीवन को, जो अपने में जाने कितनी सुन्दरता और गहराइयां लिये हुए है, कैसे अशुभ एवं असुन्दर कह सकते है? जीवन के प्रति वही दृष्टिकोण सत्य के अनुकूल हो सकता है, जिसमें विसंगतियाॅ कदापि न हो; जो मानव को ऊॅचा उठा सके; जो हमें तुच्छता से नही श्रेष्ठता से जोड़ सके। हम फिर कहेंगे, श्रेष्ठ वही हो सकते हैं, जो दूसरो ो प्रतिष्ठित कर सकें; जो दूसरों की उदासी और निराषा को छीन सकें
और उन्हे आशावान बना सके; जिनका हृदय इतना विशाल हो कि वे संसार के सारे लोगो को कह सकें कि वे हमारे है।

इच्छाओं और नैसर्गिक अभिलाषाओं को नियंत्रण में रखना इसलिए आवष्यक होता है ताकि हम अपना संतुलन न खो सकें। हमारी स्वभावजन्य इच्छाए और कामनाएॅ न पाप हैं और न उन्हे दुख का मूल कारण कहा जा सकता है। दुख का कारण तो सदैव अज्ञान हुआ करता है।

आप कदम किस ओर उठाने जा रहे है? कही ऐसा न हो कि मानहीनता और अन्धकार से निकल कर मानहीनता और अन्धकार ही की ओर आप बढ़ रहे हो।

प्रेम पूर्वक हम आपको आमंत्रित करते है कि आप ठहर कर इस्लाम का भी अध्ययन कर लें, जो पर्याय है मानव के उत्कर्ष का। अतः वास्तविक धर्म भी सही है। यह जीवन यातना नहीं हृदय-सखा का अनुग्रह है। इस्लाम लौकिक जीवन के विषय में कहता है कि यह एक अनन्त और सुन्दरतम जीवन का सांकेनिक निमंत्रण है। यह किसी सुन्दर का मधुर सन्देश है। इससे बढ़कर दुर्भाग्य क्या होगा, यदि हम इस आमंत्रण का अवमान करते और सत्य से विमुख ही रहते है। याद रहे, इस्लाम संसार को त्याग देने की शिक्षा कदापि नही देता। यह यहाॅ मानवों में जो चीज देखना चाहता है वह है: न्याय, पे्रम और करूणा! इस्लाम मनुष्य की श्रेष्ठता का पक्षधर है। इसका कहना है कि मनुष्य की श्रेष्ठता को कोई छीन नही सकता। हाॅ, यह सम्भव है कि कोई व्यक्ति या समुदाय स्वयं अपनी श्रेष्ठता को न समझ

सके और श्रेष्ठता के प्रतिकूल कर्म करने लग जाए। इस प्रकार उसकी श्रेष्ठता धूमिल या नष्ट हो कर रह जाए।
इस्लाम आपको वास्तविक प्रतिष्ठा और उच्चता की ओर बुलाता है, बुलाता रहेगा। काश! हमे अपने हित का ध्यान हो और हम इस बुलावे को रद्द न करें।

2. - इन्सान की जिन्दगी समस्याओं से खाली नही है। लेकिन कोई भी समस्या ऐसी नही होती कि उसका मुनासिब हल न निकल सके। प्रत्येक समस्या का हल सम्भव है, शर्त यह है कि हल के लिए उचित उपाय अपनाया जाए। अगर उपाय उचित नही है, तो समस्या का सही अर्थ में अस्थायी हल भी नही निकल सकता है। अगर किसी तरह से अस्थाई हल खोज भी लिया जाए, किन्तु उपाय अनुचित है, तो इससे समस्या की भयावहता में कोई सकारात्मक परिवर्तन नही होता, बल्कि वह कुछ अधिक ही संगीन और विकराल होती जाती है और अनुचित उपाय रिसते घाव पर मामूली फाहे की भाॅति ही रहता है, रोग के निवारण से उसका कोई सीधा सम्बन्ध नही रहता। ऐसी परिस्थिति में रोग बढ़ते रहने के साथ-साथ तकलीफे भी बढ़ती जाती है और पीड़ा-यंत्रणा बढ़ने के साथ ही व्यक्ति का व्यक्तित्व खतरे में पड़ जाता है।

प्रायः जब दलित भाइयों की समस्या पर विचार करते समय उनके दुख-दर्द को उनकी नियति मान लिया जाता है, तो इस प्रकार मानवीय अधिकारों की अनदेखी करने का सिलसिला शुरू हो जाता है, जो समस्या के समाधान में कभी उचित उपाय अपनाने नही देता। यदि कोई उपाय यह जानकर और इस आशा के साथ अपनाया जाता है कि वह समस्या का उचित समाधान कर देगा, तो व उसी रूप में फलदायी हो सकता है जब हल बताने वाला मनुश्य की मौलिक प्रकृति और जगत्-व्यवस्था की सभी परिस्थितियों व वास्तविकताओ का ज्ञाता हो एवं मनुष्यों का सबसे बढकर हितैषी हो।
स्पष्ट है, मनुष्य का सबसे बड़ा हितैषी, शुभचिन्तक और मददगार उसके स्रष्टा व पालनहार के सिवा कोई और नही हो सकता। उसे ही सारे तथ्यों का ज्ञान है। अतः यह आवष्यक है कि मनुष्य अपनी समस्याओं के समाधान के लिए ईष्वरीय आदेषों और शिक्षाओं की ओर रूजू करे।
जब तक वह ऐसा नही करता, इधर-उधर भटकता फिरेगा, फिर भी उसे मंजिल नही मिल सकती। इस्लाम वह सत्य धर्म है जिसे जगत् के स्रष्टा और पलनहार ने इन्सान के मागदर्शन और कल्याण के लिए अवतरित किया है। इन्सानों के बीच न्याय स्थापित करना और यह तय करना कि उनके लिए क्या चीज उचित नही है,

इसका सही निर्धारण ईष्वर ही कर सकता है। वास्तविकता यह है कि किसी दूसरे को यह अधिकार है ही नही कि वह न्याय-अन्याय उचित-अनुचित का मानदंड निर्धारित करे और न ही किसी दूसरे में यह योग्यता ही पायी जाती है कि वह वास्तविक न्याय स्थापित करने,ऊॅच-नीच, छूत-छात, शोशण और अत्याचार का अन्त करने एवं प्रत्येक इन्सान को सम्मानजनक जीवन जीने की उचित शिक्षा दे सके। इन्सान, यद्यपि समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ एवं महान् है, किन्तु वह स्वयं अपना स्वामी और शासक नही है कि अपने लिए जीवन के मानदंड निर्धारित करने का अधिकारी हो। जगत् मंे उसकी हैसियत ईष्वर के दास और प्रजा की है, इसलिए जीवन के मानदंड निर्धारित करना उसका अपना नही, बल्कि उसके स्वामी और शासक का दायित्व है। इन्सान चाहे कितने ही उच्च स्तर का हो और चाहे एक इन्सान ही नही, बल्कि बहुत-से श्रेष्ठ योग्यता प्रतिभावाले इन्सान मिलकर अपनी बुद्धि का प्रयोग करें तो भी अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं, अभिरूचियों और भेदभाव से छुटकारा पाने का उनके पास कोई मार्ग नही है। अतः इसकी कोई सम्भावना नही है कि इन्सान कोई ऐसी व्यवस्था कर सके जो वास्तव में

न्याय और समानता पर आधारित हो। कभी ऐसा मालूम होता है कि अमुक मानव-निर्मित व्यवस्था अच्छी है, पर शीध्र ही उसका व्यावहारिक प्रयोग यह प्रमाणित कर देता है कि वह न्यायपूर्ण नही है। इसी कारण प्रत्येक मानवीय व्यवस्था कुछ समय तक चलने के बाद खोटी साबित हो जाती है और इन्सान उससे मुॅह फेरकर एक दूसरे मूर्खातापूर्ण प्रयोग की ओर कदम कढ़ाने लगता है, जबकि उसे अपनी गलती दोहराने के बजाय अपनी समस्याओं के संतोशजनक एवं स्थायी हल के लिए ईष्वरीय शिक्षाओं की ओर रूजू करनाचाहिए। प्रत्येक इन्सानी समाज हजारो और लाखो लोगो से मिलकर बनता हैं। इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति आत्मा, बुद्धि और विवेक रखता है। प्रत्येक व्यक्ति अपना अलग व्यक्तित्व रखता है, जिसे फलने-फूलने और विकसित होने के लिए उपयुक्त अवसर की जरूरत है। उसको यदि अवसर नही प्राप्त होता है और व्यक्तित्व के विकास की आजादी नही होती है, तो वह कुंठित हो जाता है और उसका जीवन पशुवत् हो जाता है।
दूसरी ओर रंग, नस्ल, जाति-बिरादरी के झूठे दम्भ का शिकार होकर इन्सान अपने जैसे ही इन्सानों पर अत्याचार करने लगता है और उनके लिए तरह-तरह की परेशानियाॅ व रूकावटें खड़ी कर देता है, ताकि वे कही अपनी उन्नति करके उसके प्रभाव को चुनौती न देने लग जाएॅ।

स्पष्ट है, यह घिनौनी स्वार्थपरता मानवता के लिए अत्यन्त हारिकारक है।
इस्लाम इन्सान का प्राकृतिक एवं स्वाभाविक धर्म है। इस पर आश्रित है सारी इन्सानियत का हित व कल्याण और इसके जरिए हर प्रकार की समस्या का समाधान सम्भव है। इस्लाम की दृष्टि में सारी इन्सानियत ईष्वर का परिवार है। इस्लाम की शिक्षा है कि सारे इन्सान एक ही समुदाय है। कोई इन्सान केवल विशेष जाति, रंग, नस्ल, क्षेत्र में पैदा होने से न तो उच्च, श्रेष्ठ और सज्जन कहलाने का अधिकारी है और न ही यह न्यूनता, अपमान और निकृष्टता का मानदंड है, बल्कि सारे इन्सान चाहे किसी भी जाति, रंग और नस्ल के हो आपस में भाई-भाई है।
कुरआन में है:-''लोगो, हमने तुमको एक पुरूष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और कबीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानों। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुम में सबसे ज्यादा प्रतिष्ठित वह हैं जो तुम में सबसे अधिक परहेजगार है। निष्चय ही अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और खबर रखनेवाला है।'' (कुरआन 49: 13)

अल्लाह के दास और आखिरी पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने कहा कि ''ऐ लोगो, जान लो तुम्हारा रब एक है। तुम्हारा पिता (हजरत आदम अलैहि0) एक है। किसी अरबवासी को किसी गैर अरबवासी पर श्रेष्ठता नही और न किसी गैर अरबवासी को किसी अरबवासी पर, न गोरे को काले पर और न काले को गोरे पर श्रेष्ठता प्राप्त है। श्रेष्ठता यदि किसी को है तो सिर्फ ईष-भय और परहेजगारी से है।'' (हदीस: मुस्नद अहमद)

हजरत मुहम्मद (सल्ल0) के महानतम व्यक्तित्व के द्वारा सम्पूर्ण एवं व्यापक सदक्रान्ति आई और अनेक समस्याओं, संकटों व परेशानियों से जूझती मानवता का उद्धार हुआ। एक ओर जहाॅ विभिन्न कुरीतियों व व्यसनों का अन्त हुआ, स्त्रियों, दासों और अनाथों को भी सम्मान मिला, वही दूसरी ओर वंष, रंग आदि के भेदभाव का अन्त हो गया। जो अरबवासी हजरत मुहम्मद (सल्ल0) के आगमन से पूर्व काले लोगों से नफरत करते थे, उन्होने इस्लाम की शिक्षाएं अपना कर अपनी लोक-परलोक की जिन्दगियाॅ सुधार ली और उनकी नफरतें प्रेम में बदल गई। उन्ही अरब वासियों में एक हब्षी गुलाम हजरत बिलाल (रजि0) मस्जिदे नबवी के मुअज्जिन की हैसियत से प्रतिष्ठित हुए और उन्हे उच्च स्थान प्रदान किया गया।

दुनिया इन्सान के लिए परीक्षा की घड़ी है। दुनिया नष्वर है और परलोक की जिन्दगी शाश्वत एवं स्थायी है। प्रलय के दिन सारे इन्सानों को जीवित किया जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन अपने पालनकर्ता-प्रभु के सामने उपस्थित होकर हिसाब देना है कि जो शक्तियाॅ और योग्यताएं उसे दुनिया में प्रदान की गई थी, उनसे काम लेकर और जो साधन उसे प्रदान किये गये थे उनका उपयोग करके वह अपने व्यक्तित्व का कैसा स्वरूप बनाकर लाया है। ईष्वर के सामने की यह जवाबदेही व्यक्तिगत रूप से होगी। वहाॅ वंष, समुदाय और जातियां खड़ी होकर हिसाब नही देंगी, बल्कि दुनिया के सारे सम्बन्धों से काटकर ईष्वर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अदालत में हाजिर करेगा और प्रत्येक व्यक्ति से अलग-अलग हिसाब लेगा। अतः आवष्यक है कि इन्सान उस मार्ग पर चले, जिससे उसको पैदा करनेवाला खुष हो और वह उसकी खुशी हासिल कर सके। यह मार्ग सिर्फ इस्लाम इस्लाम है, जिस पर चलकर इन्सान अपनी सभी समस्याएं हल कर सकता है और इज्जत व सम्मान की जिन्गदी प्राप्त कर सकता है।

आज प्रत्येक भाषा में इस्लाम की शिक्षाओं का अध्ययन करे, तो इस्लाम का सही स्वरूप आपके सामने आ सकेगा,

जो सत्यमार्ग पर अग्रसर होने मे आपका सहायक सिद्ध होगा।